Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
April to June 2025, E-Journal, Vol. I, Issue L (50), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

राजकीय उच्च माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की लैंगिक संवेदनशीलता का तुलनात्मक अध्ययन

मनीषा बागोरा* डॉ. प्रमिला पुर्बिया**

* शोध छात्रा (शिक्षा) जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय,उदयपुर (राज.) भारत
** सहायक आचार्य, लोकमान्य तिलक शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, उदयपुर (राज.) भारत

शोध सारांश – प्रस्तुत शोध पत्र उदयपुर जिले के राजकीय उच्च माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों में लैंगिक संवेदनशीलता के तुलनात्मक अध्ययन पर आधारित है।लैंगिक संवेदनशीलता में जागरूकता हेतु हमें विद्यालय स्तर की शिक्षा से शुरूआत करनी होगी और उसके लिए इसे विद्यालय की उच्च स्तरीय शिक्षा तक सशक्त रूप से संचालित करना होगा। साथ ही विद्यालय को भी जेण्डर संवेदनशीलता को अपनाते हुए उचित वातावरण प्रदान करना होगा। विद्यालय में अधयापक बालक–बालिकाओं के साथ समान व्यवहार करें।लैंगिक संवेदनशीलता के अन्तर्गत ग्रामीण छात्र एवं छात्राओं में लैंगिक संवदेनशीलता का स्तर औसत से कम जबकि शहरी छात्र एवं छात्राओं में औसत से अधिक पाया गया। वहीं ग्रामीण स्तर पर औसत से कम एवं शहरी स्तर पर औसत से अधिक पाया गया। जबकि छात्रों एवं छात्राओं में औसत से कम लैंगिक संवदेनशीलता का स्तर पाया गया। ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थयों के लैंगिक संवेदनशीलता में सार्थक अन्तर होता है, मध्यमान अंकों को देखने पर स्पष्ट होता है कि ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की तुलना में शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों में लैंगिक संवेदनशीलता का स्तर अधिक होता है।

प्रस्तावना – प्रारम्भ से ही समाज में पुरुष सत्तात्मक रूप मुख्य रहा है। समाज ने स्त्री व पुरुष की शरीर रचना के आधार पर दोहरे मानदण्ड अपना रखे थे। जिसमें दोनों की भूमिका अलग–अलग प्रकार की थी। समाज शास्त्रीय दृष्टिकोण से जेण्डर अथवा लैंगिक का अर्थ दो भिन्न शरीराकृति वाले व्यक्तियों से संबंधित भूमिका से अभिप्राय विभिन्न संस्कृतियों में लिंग के अनुरूप किए जाने वाले व्यवहार प्रतिमान से है। असमान लैंगिक संबंध न केवल वर्चस्व को बढ़ावा देते हैं बल्कि वे लड़के–लड़कियों में तनाव भी पैदा करते हैं एवं उनकी मानवीय क्षमताओं के पूर्ण विकास की स्वतंत्रता में बाधा पहुंचाते हैं। यह सबके हित में है कि मनुष्य को लिंग असमानताओं से मुक्त कराया जाए। उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी किशोरावस्था को प्राप्त कर लेते है इस अवस्था में कई शारीरिक, मानसिक एवं संवेगात्मक परिवर्तन होते है।

लैंगिक संवेदनशीलता में जागरूकता हेतु हमें विद्यालय स्तर की शिक्षा से शुरूआत करनी होगी और उसके लिए इसे विद्यालय की उच्च स्तरीय शिक्षा तक सशक्त रूप से संचालित करना होगा। साथ ही विद्यालय को भी जेण्डर संवेदनशीलता को अपनाते हुए उचित वातावरण प्रदान करना होगा। विद्यालय में अध्यापक बालक–बालिकाओं के साथ समान व्यवहार करें। विद्यालयों में विद्यार्थियों के साथ सोम्य तथा स्नेहवत् व्यवहार कर दोनों के बीच के भेद को मिटाना होगा तथा शिक्षा के मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास की ओर बढ़ना होगा।

वर्तमान समय में छात्र छात्राओं में लैंगिक संवेदनशीलता की समझ विकसित करना अनिवार्य है। पुरूष एवं महिला दोनों ही समाज के स्तम्भ है। व्यक्ति कक्षाओं से लेकर अपने आजीविका के क्षेत्र में लैंगिक संवेदनशीलता की समझ रखेगा तो निश्चित ही समाज में समानता के अवसर प्राप्त हो पायेगे। समाज में महिलाओं के प्रति आदर की भावना जाग्रत होगी। समाज में सभी क्षेत्रों में महिला एवं पुरूषों को स्थान प्राप्त हो पाएगा।

शोध प्रश्न:

1. क्या राजकीय उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में लैंगिक संवेदनशीलता होती है?
2. क्या राजकीय उच्च माध्यमिक स्तर के ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों की लैंगिक संवेदनशीलता एक समान होती है ?

शोध उद्देश्य:

1. राजकीय उच्च माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की लैंगिक संवेदनशीलता का अध्ययन करना।
2. राजकीय उच्च माध्यमिक स्तर के ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों की लैंगिक संवेदनशीलता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना:

1. राजकीय उच्च माध्यमिक स्तर के ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों की लैंगिक संवेदनशीलता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध परिसीमन:

1. शोधकार्य को उदयपुर जिले तक सीमित रखा गया।
2. प्रस्तुत शोधकार्य को राजकीय उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों तक सीमित रखा गया।

न्यादर्श चयन: उपर्युक्त शोध हेतु यादृच्छिक प्रतिचयन विधि द्वारा न्यादर्श चयन किया गया जो इस प्रकार है :–

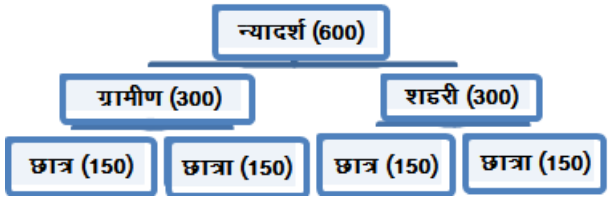

प्रस्तुत शोध हेतु शोधार्थी द्वारा न्यादर्श चयन हेतु उदयपुर जिले के राजकीय उच्च माध्यमिक स्तर के 30 विद्यालयों का चयन लॉटरी विधि से किया गया। प्रत्येक विद्यालय से 20 विद्यार्थियों का सोद्देश्य विधि से चयन करते हुए कुल 600 विद्यार्थियों का चयन किया गया। 600 में से 300 विद्यार्थी ग्रामीण तथा 300 शहरी क्षेत्र से चयन किए गए। 300 ग्रामीण विद्यार्थी में से 150 छात्र एवं 150 छात्राओं को सम्मिलित किया गया। इसी प्रकार 300 शहरी विद्यार्थी में से 150 छात्र एवं 150 छात्राओं को सम्मिलित किया गया।

शोध विधि, प्रविधि, उपकरण

1. **शोध विधि–** इस अनुसंधान में शोधार्थी ने राजकीय उच्च माधयमिक स्तर के विद्यार्थियों की लैंगिक संवेदनशीलताके तुलनात्मक अध्ययन हेतु शोधकर्त्ता ने सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।
2. **शोध प्रविधि–** प्रस्तुत शोध से प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण हेतु सांख्यिकी प्रविधियों में 'टी' परीक्षण का प्रयोग किया गया।
3. **शोध उपकरण–** प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए सर्वेक्षण द्वारा आंकडों के संकलन हेतु मानकीकृत उपकरण का प्रयोग किया गया है, जो इस प्रकार है:–

स्वनिर्मित उपकरण :–लैंगिक संवेदनशीलता प्रमापनी

परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या

उद्देश्य 1 :राजकीय उच्च माधयमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की लैंगिक संवेदनशीलता का अध्ययन करना।

सारणी संख्या 1: लैंगिक संवेदनशीलता का स्तर

	कुल लैंगिक संवेदनशीलता			
	मध्यमान	मानकविचलन	N	श्रेणी
ग्रामीण छात्र	96.58	10.817	150	औसत से कम
ग्रामीण छात्राएँ	101.44	5.761	150	औसत से कम
शहरी छात्र	123.80	16.410	150	औसत से अधिक
शहरी छात्राएँ	138.21	21.549	150	औसत से अधिक
कुल ग्रामीण	99.01	8.987	300	औसत से कम
कुल शहरी	131.00	20.437	300	औसत से अधिक
कुल छात्र	110.19	19.451	300	औसत से कम
कुल छात्राएँ	119.82	24.229	300	औसत से कम

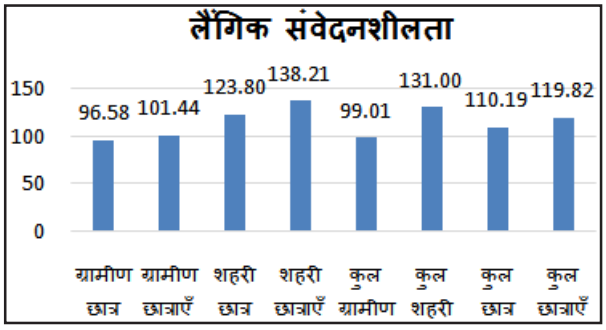

आरेख संख्या 1

लैंगिक संवेदनशीलता का स्तर

विश्लेषण –लैंगिक संवेदनशीलता के अन्तर्गत ग्रामीण छात्र एवं छात्राओं में लैंगिक संवदेनशीलता का स्तर औसत से कम जबकि शहरी छात्र एवं छात्राओं में औसत से अधिक पाया गया। वहीं ग्रामीण स्तर पर औसत से कम एवं शहरी स्तर पर औसत से अधिक पाया गया। जबकि छात्रों एवं छात्राओं में औसत से कम लैंगिक संवदेनशीलता का स्तर पाया गया।

उद्देश्य सं. 2. राजकीय उच्च माध्यमिक स्तर के ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों की लैंगिक संवेदनशीलता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

सारणी संख्या 2: ग्रामीण क्षेत्र एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की लैंगिक संवेदनशीलता के मध्यमानों के अन्तरों की सार्थकता की गणना

	लैंगिक संवेदनशीलता	
	ग्रामीण	शहरी
N	300	300
मध्यमान	99.010	131.003
मानक विचलन	8.987	20.437
मध्यमान की मानक त्रुटि	0.519	1.180
मध्यमान अन्तर	31.993	
'टी' मान	24.821	
P मान	0.000	

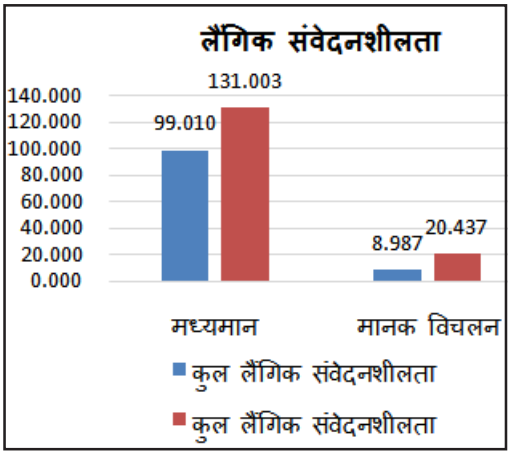

आरेख संख्या 2

ग्रामीण क्षेत्र एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की लैंगिक संवेदनशीलता के मध्यमानों के अन्तरों की सार्थकता की गणना

विश्लेषण –लैंगिक संवेदनशीलता के अन्तर्गत ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों का मध्यमान 99.010 तथा शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों का मध्यमान 131.003 प्राप्त हुआ। 'टी' का मान 24.821 प्राप्त हुआ जो कि 0.01 स्तर पर सार्थक है तात्पर्य है कि ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थयों के लैंगिक संवेदनशीलता में सार्थक अन्तर होता है, मध्यमान अंकों को देखने पर स्पष्ट होता है कि ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की तुलना में शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों में लैंगिक संवेदनशीलता का स्तर अधिक होता है।

परिकल्पना सं. 1. : राजकीय उच्च माधयमिक स्तर के ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों की लैंगिक संवेदनशीलता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

निष्कर्ष –अत: शून्य परिकल्पना के अस्वीकृति की अवधारणा सिद्ध होती है। इसलिए ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की लैंगिक संवेदनशीलता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है, अस्वीकृत होती है। अत: कहा जा सकता है कि ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की लैंगिक संवेदनशीलता के मध्यमानों में सार्थक अन्तर है।

शोध से प्राप्त निष्कर्ष – प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्राप्त दत्तों का विष्लेषण करने के पश्चात् निम्नलिखित निष्कर्ष सामने आए :-

1. लैंगिक संवेदनशीलता के अन्तर्गत ग्रामीण छात्र एवं छात्राओं में लैंगिक संवदेनशीलता का स्तर औसत से कम पाया गया।
2. शहरी छात्र एवं छात्राओं में लैंगिक संवेदनशीलता का स्तर औसत से अधिक पाया गया।
3. ग्रामीण स्तर पर औसत से कम एवं शहरी स्तर पर लैंगिक संवेदनशीलता का स्तर औसत से अधिक पाया गया।
4. छात्रों एवं छात्राओं में औसत से कम लैंगिक संवदेनशीलता का स्तर पाया गया।
5. लैंगिक संवेदनशीलता के अन्तर्गत ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों का मध्यमान 99.010 पाया गया।
6. शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों का मध्यमान 131.003 प्राप्त हुआ।
7. 'टी' का मान 24.821 प्राप्त हुआ।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. पाण्डेय, डॉ. रामशकल (2014),'विश्व के श्रेष्ठ शिक्षाशास्त्री', श्री विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
2. व्यास, डॉ. भगवतीलाल (2016),'समकालिन भारत और शिक्षा', राधा प्रकाशन प्रा. लि., आगरा।
3. कपिल, एच.के. (2007)'अनुसंधान विधियाँ', एच.पी. भार्गव बुक हाउस 4/230, कचहरी घाट, आगरा
4. कपिल, एच.के. (2010) 'सांख्यिकी के मूल तत्व', अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा-2
5. भट्नागर, सुरेश (1992-93) 'शिक्षा मनोविज्ञान', आर. लाल बुक डिपो, मेरठ।
6. भार्गव, डॉ. महेश (2003),'आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं मापन' वेदान्त पब्लिकेशन, लखनउ।
7. चौबे, डॉ. सरयू प्रसाद (2006)'शिक्षा मनोविज्ञान', अनु प्रकाशन, जयपुर।
8. गैरेट हेनरी ई. (1989),'शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकीय के प्रयोग' कल्याणी पब्लिशर्स, उ.प्र.।
9. माथुर, डॉ. एस.एस. (1993).'शिक्षा मनोविज्ञान', विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, उ.प्र.।
10. Berman, P. & McLaughlin, M. (1978) Implementation of education innovation. Educational Forum, 40 (3) 345-370

****